भारतीय संस्कृति

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मन:।
स्वंस्वं चरित्रं शिक्षरेन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

'मनुस्मृति'

"मनुस्मृति में महर्षि मनु लिखते है कि विश्व के समस्त भागों से ज्ञान के पिपासु मानव ज्ञान की खोज में इस आर्यवर्त में आएंगे तथा इस देश की संस्कृति से नैतिकता एवम् चरित्र की शिक्षा प्राप्त करेंगे।"

हमारा भारत देश संसार के देशों का सिरमौर है। इसका प्राचीनतम नाम आर्यावर्त था। इस के सदृश विश्व में कोई देश नहीं है। यह देश इतना पावनमय एवं गौरवमय है कि यहाँ देवता भी जन्म लेने के लिये तरसते हैं। यह ऋषियों-मुनियों, संतों की जन्मभूमि एवं आदिम संस्कृति की क्रीड़ास्थली है। सम्पूर्ण विश्व को मानवता का सन्देश इसी धरती से प्राप्त हुआ है। यह ऐसा पारसमणि देश है जिसे लौह रूपी विदेशी छूते ही सुवर्ण अर्थात धनाढ्य हो जाते हैं। इसे धरती का स्वर्ग, देवताओं की जन्मभूमि तथा विश्व का सिरमौर कहकर भी सम्बोधित किया जाता है ।

हमारे देश का प्राकृतिक स्वरूप भी मनमोहक है। इसके पर्वतीय प्रदेशों की हिमाच्छादित पर्वतमालाएं, दक्षिण प्रदेशों के समुद्रतटीय नारियल के वृक्ष, गंगा यमुना के उर्वर मैदान प्रकृति की अनुपम भेंट हैं। इस देश में हर प्रकार की जलवायु पाई जाती है इसी भूमि पर धरती का स्वर्ग काश्मीर है जिसकी मनोरम घाटियाँ हमें स्वर्गलोक की दुनिया में ले जाती हैं। हिमालय हमारे देश का सशक्त प्रहरी है तो हिन्दमहासागर इस भारत माता के चरणों को धोता रहता है। हमारा यह विशाल देश उत्तर में काश्मीर से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक और पूर्व में असम से लेकर पश्चिम में गुजरात तक फैला हुआ है। हमारे देश में विभिन्नता में एकता की भावना निहित है।

भारतीय संस्कृति एक मजबूत चट्टान की तरह अटल है। समय का चक्र

इसे हिला न सका। परिवर्तनशील इतिहास के उत्थान पतन के झोंके इसे विचलित न कर सके। अत्याचारों की आंधी चलती रही, दानवता के तूफानी थपेड़े लगते रहे पर यह चट्टान अडिग रही। मुगल, पुर्तगाली, हूण, शक, अनार्य, द्रविड़, ईसाई आदि अनेक जातियाँ इस धरती पर आईं और अपने साम्प्रदायिक सिद्धान्तों के हथौड़े से इस चट्टान पर प्रहार करती रहीं, पर यह चट्टान टूटी नहीं। सभी धर्म व मज़हब इसमें समा गए। यह संस्कृति एक विशाल कल्पवृक्ष है जिसकी शीतल छाया के नीचे विश्व के सभी समुदायों को शान्ति मिली। भारतवासी उदार हृदय वाले हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में विश्वास रखते हैं। यहाँ के ऋषि दधीचि परोपकार के लिए अपने शरीर को अस्थियाँ तक दान कर देते थे। यहाँ का राजा शिवि पक्षियों के जीवन की रक्षा के लिए अपना मांस काट-काट कर तराजू पर चढ़ा देता था। यहाँ के राजा रघु, दिलीप, हरिश्चन्द्र प्रजा को सर्वस्व दान देकर हंसते-हंसते राज्य का त्याग कर देते थे। यहाँ का राजा दानवीर कर्ण देवराज इन्द्र के कहने पर अपना कवच कुण्डल सहित उसे दान कर देता है।

किसी संस्कृति ने ऐसे पुत्र को जन्म नहीं दिया जिसे रात को कहा जाए कि प्रातः तुम्हारा राज्याभिषेक होगा और उसी मुहूर्त में बिना किसी अपराध के पिता चौदह वर्ष के वनवास की आज्ञा दे, और पुत्र का मुखमण्डल इस आज्ञा को पा कर कमल की भांति खिल उठे। विश्व की किसी संस्कृति में ऐसी पत्नी नहीं मिलेगी जो पिता और ससुर के स्वर्ग जैसे वैभव को छोड़कर पति के साथ चौदह वर्ष जंगलों की खाक छानती रहे और पति ऐसी धर्मपरायणा पत्नी को बिना किसी अपराध के मात्र लोकरंजन के लिए सर्वथा त्याग दे और पत्नी हमेशा उस पति के चरणों का ध्यान लगाए रखे एवं जन्मजन्मान्तर तक उसकी पत्नी बनने की इच्छा करे। कोई भी संस्कृति ऐसी पति परायणा सीता जैसी नारी नहीं पैदा कर सकती ।

किसी भी संस्कृति में लक्ष्मण व भरत जैसे त्यागी भाई नहीं मिल सकते। लक्ष्मण अपनी पत्नी उर्मिला को अपनी माताओं की सेवा के लिए छोड़कर भाई के साथ चौदह साल वन में रहे। भरत अपने भाई की पवित्र पादुकाओं को राज्य सिंहासन पर बिठाकर स्वयं वनवासियों का भेष धारण करके रहने

लगे। भरत की पत्नी माण्डवी अयोध्या के निकट नन्दिग्राम आश्रम में तपस्विनी के भेष में रही। फूल-पौधों और लताओं को सजाती उन्हें नियम से पानी देती। भरत रोज आश्रम में आते। माण्डवी उनकी दूर से ही पूजा कर लेती। ऐसे त्याग की मिसाल पूरी दुनिया में नहीं मिल सकती।

केवल भारतीय संस्कृति में ही नारी को देवी मानकर पूजा की जाती है व कहा गया है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं। यहाँ की नारी अनुसूया ब्रह्मा, विष्णु, महेश को शिशु बनाकर गोदी में खिलाती है। यहाँ की पतिव्रता सावित्री अपने पति सत्यवान को यमलोक से वापिस ले आती है। यहाँ की माता मन्दालसा लोरी में ही शिशु को ब्रह्मज्ञान का उपदेश देती है।

यहाँ का बालक ध्रुव बचपन में ही ध्रुव-पद को प्राप्त कर लेता है। बालक नचिकेता यमराज के पास ब्रह्मज्ञान का उपदेश लेने पहुँच जाते हैं। भरत बचपन में ही सिंहों के दाँतों के साथ खेलते थे।

हिन्दू संस्कृति की रक्षा के लिए अपने चारों पुत्रों को देश पर वारने वाले श्री गुरु गोबिन्दसिंह जैसे पिता कहाँ मिलेंगे। विष पिलाने वाले रसोइए को भी रुपयों की थैली देकर वहाँ से भगाने वाले ऋषि दयानन्द जैसे दयालु संत कहाँ मिलेंगे।

ऐसी संस्कृति और कहाँ मिलेगी जहाँ पेड़ों की भी पूजा की जाती है। अतिथि को देवता माना जाता है। साँपों को दूध पिलाया जाता है। कन्याओं को माँ दुर्गा मानकर उनके चरणों को धोया जाता है। यहाँ गंगा, यमुना, सरस्वती नदियों की माँ कहकर पूजा की जाती है।

वेदों की वाणी इसी धरती पर गूजंती है। उपनिषदों की ज्ञान धारा यहीं

प्रवाहित होती है। गीता का उपदेश इसी धरा पर दिया गया। सूर, तुलसी एवं मीरा का काव्य इसी देश में रचा गया था। अहिंसा, प्रेम, भाईचारा और निष्काम कर्म का सन्देश इसी धरा ने संसार को दिया।

एक बार स्वामी रामतीर्थ विदेश गए। उन्होंने देखा एक स्त्री अपने पति की कब्र पर पंखा कर रही थी। स्वामी जी यह देख कर आश्चर्यचकित रह गए। वह चुप न रह सके, उन्होंने उस महिला से कहा कि भारत में तो ऐसे दृश्य देखने में आते हैं कि भारतीय नारियाँ अपने मृत पति में भी श्रद्धा रखती हैं। देवी, तू धन्य है जो इस तरह अपने मृत पति का सम्मान कर रही है। वह स्त्री कहने लगी, साधु! तुम गलत समझे हो, वास्तविकता यह है कि मेरा पति मुझे बहुत प्रेम करता था, मरते हुए उसने मुझे कहा अगर तुम्हें मुझसे प्रेम है तो दूसरा विवाह मत करना। मैंने कहा यह कैसे हो सकता है? तो उसने फिर कहा-अच्छा, इतना जरूर करना कि जब तक मेरी कब्र की मिट्टी नहीं सूख जाती, तब तक दूसरा विवाह न करना। सो 'ऐ साधु - मैं वह वचन पालन कर रही हूँ कि कब यह मिट्टी सूखे और कब मैं दूसरी शादी करूँ।' तभी स्वामी रामतीर्थजी के मुँह से निकला "वाह री! भारतीय नारी, संसार में तेरे जैसी पवित्र, पतिव्रता, धर्म एवं सतीत्व की रक्षा करने वाली बहादुर कोई दूसरी नारी नहीं हो सकती।"

'जलती हुई शमा पर तो परवाने चढ़ते खूब देखे हैं पर धन्य है भारत की नारी! जो बुझी हुई शमा पर भी परवान चढ़ जाती है।'

इस प्रकार भारतीय संस्कृति महान है। इतिहास के पन्ने बदलते रहे, काल-चक्र चलता रहा, परन्तु हमारे ऋषियों, मुनियों और सन्तों की कठोर तपस्या द्वारा निर्धारित मानवता के आदर्श न बदले। हमारी संस्कृति अटल, अडिग और चिरस्थायी बनी रही।